अन्तर्विभागीय समन्वय

दिमागी बुखार पर नियंत्रण हेतु सरकार के विभिन्न विभाग एकजुट होकर प्रयास कर रहे हैं।

दिमागी बुखार की रोकथाम के लिये विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा की जाने वाली गतिविधियां -

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग (नोडल विभाग)

- टीकाकरण
- गृह भ्रमण द्वारा जन जागरुकता अभियान (दस्तक)। बच्चों में बुखार की ट्रैकिंग और उपचार के लिये आशा कार्यकर्ताओं का प्रोत्साहन
- 617 सर्वोच्च जोखिम गांव/अन्य प्रभावित क्षेत्रों में फॉगिंग/लारवीसाइडल का छिड़काव

समेकित बाल विकास परियोजना

- कुपोषित बच्चों को चिन्हित कर सूचीबद्ध करना
- अतिकुपोषित बच्चों को जिला अस्पतालों के पोषण पुनर्वास केन्द्रों में रेफर एवं जाँच करना
- आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा बुखार के मामलों की निगरानी रखना और उपचार के लिये प्रोत्साहित करना
- जेई/एईएस के कारण अपंगता के शिकार बच्चों को चिन्हित करना ताकि विकलांग कल्याण विभाग उनके लिये उचित कदम उठा सके

शिक्षा विभाग

- विद्यार्थियों द्वारा जागरूकता रैली का आयोजन
- विद्यार्थियों के साथ सामूहिक शपथ कार्यक्रम का आयोजन
- अध्यापकों द्वारा स्वच्छता तथा स्वास्थ्य के विषय पर विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा तथा विशेष कक्षाओं में जागृत करना

कृषि विभाग

- रिहायशी इलाकों के आसपास स्थित खेतों में चूहों की रोकथाम

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग

- गांवों में नालियों की नियमित साफ़–सफ़ाई
- सामुदायिक श्रमदान द्वारा जंगली झाड़ियों की कटाई
- कम गहरायी वाले हैंडपंप की पहचान
- इंडिया मार्क–2 हैंडपंप की मरम्मत और प्लेटफार्म का निर्माण
- गांव में प्रभात फेरी और सामूहिक शपथ के कार्यक्रम का आयोजन
- फॉगिंग के लिये मनरेगा फंड का उपयोग

स्वच्छ भारत मिशन

- सर्वोच्च जोखिम वाले 617 गांवों को प्राथमिकता देते हुए खुले में शौच से मुक्ति दिलाना

नगर निगम/नगरीय विकास

- नालियों की सफ़ाई और कूड़े का निस्तारण
- नगरीय क्षेत्रों में फॉगिंग
- स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था

पशुपालन विभाग

- सूअर पालन को रिहायशी इलाकों से स्थानांतरित करने को लेकर जन जागरुकता तथा सुअर पालकों के लिये वैकल्पिक व्यवसाय की व्यवस्था
- गाय–भैंसों के बाड़ों की साफ़–सफ़ाई को लेकर प्रचार–प्रसार

विकलांग कल्याण

- जेई/एईएस की वजह से अपंगता के शिकार बच्चों के बीच सहायक उपकरणों का वितरण

विशेष संचारी रोग नियंत्रण पखवाड़ा

ज़रूरी है आपका योगदान

जन प्रतिनिधि

- ब्लॉक मुख्यालय, निर्वाचन क्षेत्र मुख्यालय एवं ग्रामीण स्तर पर स्कूली बच्चों, स्थानीय धर्म गुरुओं और आम जनता के साथ रैली में भाग लें।
- विधायक ब्लॉक स्तर के पीएचसी/सीएचसी/उपकेन्द्र का भ्रमण कर तैयारियों की समीक्षा करें।
- स्वास्थ्य कर्मचारी एवं आशा कार्यकर्ता के साथ बैठक करें।
- ग्राम प्रधानों के साथ बैठक करें।
- स्थानीय सरकारी स्कूलों का दौरा, शिक्षकों से मिलना और अभियान में हो रही अतिरिक्त गतिविधियों में हिस्सा लेने वाले स्कूली बच्चों को प्रोत्साहित करना।
- सामुदायिक बैठक का संबोधन, दिमागी बुखार के कारण जिन अभिभावकों ने अपने बच्चे खोयें हैं उनसे मिलना एवं दिमागी बुखार अभियान के लिये समर्थन जुटाना।
- ग्राम स्तरीय जागरुकता रैली में हिस्सा लेना।
- विभिन्न विभागों के सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से प्रचार–प्रसार करना।

स्कूल

- बच्चों के बीच दिमागी बुखार संबंधित जानकारी प्रदान करने वाली गतिविधियों का आयोजन करें।
- दिमागी बुखार संबंधित जन जागरुकता रैली का आयोजन करें।
- अध्यापकों द्वारा स्वच्छता तथा स्वास्थ्य के विषय पर विधार्थियों को प्रार्थना सभा में जागृत करें।

मीडिया

- दिमागी बुखार के बारे में सही तथ्य प्रस्तुत करें। इसके अलावा रोकथाम और उपचार के तरीके बताएं।
- जागरुकता के लिये विशेष अभियान चलायें।
- दिमागी बुखार की जंग में विजयी परिवारों की सच्ची कहानियों का प्रचार–प्रसार करें।
- जागरुकता के लिये सोशल मीडिया का इस्तेमाल करें।
- स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के प्रयासों पर सकारात्मक लेख।
- विशेषज्ञों द्वारा दिमागी बुखार पर विशेष कॉलम।
- जागरुकता के लिये सोशल मीडिया का इस्तेमाल करें।

धर्म गुरु

- अपने प्रवचन में दिमागी बुखार संबंधित संदेश अवश्य शामिल करें।
- साफ़–सफ़ाई, शौचालय का प्रयोग एवं मच्छरों के काटने से सुरक्षा संबंधी अभियान चलायें।

जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारी

- इस अभियान को कुशल नेतृत्व प्रदान करें।
- विभिन्न विभागों के बीच अन्तर्विभागीय समन्वय स्थापित करते हुए अभिनव प्रयोगों के साथ अभियान को सफल बनायें।

अंतरराष्ट्रीय सहयोगी संगठनों का साथ

दिमागी बुखार के खिलाफ इस व्यापक अभियान में डब्ल्यू.एच.ओ. (विश्व स्वास्थ्य संगठन), पाथ और यूनिसेफ सकारात्मक तकनीकी सहयोग प्रदान कर रहे हैं। इसमें यूनिसेफ की भूमिका प्रमुख संचार सहायक की है।

World Health Organization | PATH | unicef for every child

NATIONAL HEALTH MISSION — राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन

बुखार में देरी पड़ेगी भारी

दस्तक

दिमागी बुखार पर सरकार का सीधा वार, सुरक्षित होगा हर परिवार

दिमागी बुखार की रोकथाम और प्रबंधन के लिये विशेष संचारी रोग नियंत्रण पखवाड़ा

एक्यूट एन्सिफेलाइटिस सिंड्रोम क्या है

उपचार में देरी होने पर दिमागी बुखार (नवकी बीमारी) गंभीर रूप धारण कर सकता है, तब इसे एक्यूट एन्सिफेलाइटिस सिंड्रोम (एईएस) कहा जाता है। एईएस के कारण आजीवन अपंगता या मृत्यु हो सकती है। भारत और खासकर उत्तर प्रदेश में यह एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है। उत्तर प्रदेश में वर्ष 2017 में 4,724 लोग इस बीमारी की चपेट में आये जिसमें से 654 लोगों की असमय मृत्यु हो गयी। मृतकों में अधिकांश 10 साल से कम उम्र के बच्चे थे।

उत्तर प्रदेश में एईएस के मामले कहां-कहां पाये जाते हैं

पूर्वी उत्तर प्रदेश के बस्ती और गोरखपुर मंडल के सात ज़िले एईएस से सर्वाधिक प्रभावित हैं जहां इसके 85 फीसदी मामले देखे गये हैं। कुल 38 ज़िले जेई से प्रभावित पायें गये हैं जिनमें से 20 ज़िलों को उच्च जोखिम वाले इलाके के तौर पर चिन्हित किया गया है।

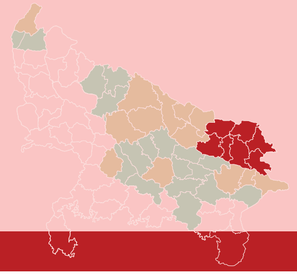

दिमागी बुखार (नवकी बीमारी) के मुख्य कारण

उत्तर प्रदेश में दिमागी बुखार (नवकी बीमारी) के मुख्य कारण स्क्रब टाइफस, जापानी एन्सिफेलाइटिस, एंटिरोवायरस, डेंगू, ट्यूबरकुलर मैनिंजाइटिस, हर्पीस सिम्पलेक्स वायरस, दिमागी मलेरिया बुखार, चिकनगुनिया, खसरा, मम्प्स, टायफायड आदि हैं।

1. स्क्रब टाइफस

स्क्रब टाइफस क्या है?

स्क्रब टाइफस जीवाणुओं (बैक्टीरिया) के कारण फैलने वाली एक बीमारी है जो अचानक बुखार के साथ होती है। यह बीमारी उत्तर प्रदेश में एईएस की मुख्य वजह है। यह झाड़ियों, जंगलों या कटी पड़ी सीलन युक्त लकड़ियों में पाये जाने वाले छोटे कीड़ों की वजह से फैलता है इसलिये इसे स्क्रब कहते हैं।

स्क्रब टाइफस कैसे फैलता है?

इस बीमारी को माईट्स या 'चिग्गर' फैलाते हैं और उनके माध्यम से यह इंसानों तक पहुँचता है। माईट्स या 'चिग्गर' जंगली झाड़ियों, छोटे पेड़, नदी किनारे, धान के खेतों, किचन गार्डन (यदि स्वच्छता न हो) तथा घास वाले बगीचों में पाये जाते हैं। माईट्स छोटे–छोटे चूहे और छछुंदर की त्वचा पर पनपते हैं।

जब लोग घास, झाड़ियों व जगलों में शौच इत्यादि के लिये जाते है तब माईट्स के काटने से बीमारी फैलाने का खतरा बढ़ जाता है।

स्क्रब टाइफस के लक्षण क्या हैं?

यदि माईट्स या 'चिग्गर' काट ले तो उसका असर 5 से 20 दिनों के भीतर दिखाई देने लगता है।

- तेज़ बुखार के साथ सांस फूलना, खांसी, मिचली, उलटी होना, मांसपेशियों और सिर में दर्द।
- त्वचा पर चकत्ता (एस्कार रैश) – यह लगभग 1 सेंटीमीटर चौड़ाई का एक चकत्ता होता है जो माईट्स या 'चिग्गर' के काटने के स्थान पर बनता है।

उत्तर प्रदेश के कौन-कौन से क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित हैं?

पिछले दो वर्षों में स्क्रब टाइफस उत्तर प्रदेश के बस्ती और गोरखपुर मंडल के सात ज़िलों (गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज, सिद्धार्थनगर, संतकबीरनगर और बस्ती) में पाया गया है।

स्क्रब टाइफस का इलाज क्या है?

स्क्रब टाइफस के इलाज के लिये एज़िथ्रोमायिसिन और डॉक्सीसिक्लिन नामक एंटीबायोटिक दवायें प्रयोग होनी चाहिये। यदि सही समय पर सही इलाज किया गया हो तो प्रभावित व्यक्ति पूरी तरह से ठीक हो सकता है। स्क्रब टाइफस के लिये कोई प्रभावी टीकाकरण नहीं है।

यदि स्क्रब टाइफस का इलाज न किया जाये जो पहले सप्ताह के बाद 30–45 फीसदी मामलों में यह दिमागी बुखार, किडनी फेलियर, पीलिया (जॉन्डिस), निमोनिया आदि जैसी जानलेवा बिमारियों की वजह बन सकता है। दिमागी बुखार हो जाने पर मरीज़ गंभीर मानसिक क्षति जैसे लकवा और मानसिक मंदता की चपेट में आ सकते हैं।

2. जापानी इन्सेफेलाइटिस (जेई)

जेई कैसे फैलता है?

जेई का वायरस मच्छरों के काटने से फैलता है। मच्छर ख़ासकर ठहरे हुए पानी और धान के खेतों में पनपते हैं और आसपास के आबादी वाले इलाकों में बीमारी की वजह बनते हैं। यह संक्रमण व्यक्ति के सेंट्रल नर्वस सिस्टम, मस्तिष्क और स्पाइनल कॉर्ड को प्रभावित करता है।

जेई का ख़तरा सबसे ज़्यादा किसे है?

एक से पंद्रह साल के बच्चों में जेई के फैलने का खतरा सबसे अधिक होता है। जो लोग धान की खेती या सूअर पालन वाले इलाकों में निवास करते हैं उन पर जेई की चपेट में आने का ख़तरा सबसे ज़्यादा बना रहता है।

जेई के क्या-क्या लक्षण हैं?

जेई से प्रभावित लोगों में निम्न प्रकार के लक्षण 5 से 15 दिनों में दिखने लगते हैं:–

- बुखार, कंपकपी, थकावट, सिरदर्द, मितली और उल्टी आदि फ्लू जैसे लक्षण।
- शुरू में उलझन और चिड़चिड़ापन के लक्षण भी दिख सकते हैं।
- जब संक्रमण दिमाग तक पहुंच जाता है तो उसे दिमागी बुखार (एन्सिफेलाइटिस) कहा जाता है। इसकी वजह से मरीज़ लकवा या मानसिक अपंगता का शिकार भी हो सकता है।

काफी बच्चों में गंभीर मानसिक क्षति, जैसे लकवा और मानसिक मंदता हो जाती है और अनेक मामलों में जेई घातक सिद्ध हो सकता है।

बच्चों को जेई से कैसे बचाया जा सकता है:

- नियमित टीकाकरण के दौरान सभी बच्चों को जेई के दो टीके लगवाने ज़रूरी है। पहला टीका 9 महीने से 1 वर्ष की आयु और दूसरा टीका 16 माह से 2 वर्ष की आयु के भीतर लगवाना चाहिये।
- जेई विशेष टीकाकरण अभियान के दौरान 9 माह से लेकर 15 वर्ष के सभी व्यक्तियों को एक टीका लगाया जाता है ताकि उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो सके।

जेई का इलाज कैसे?

जेई के इलाज के लिये अभी तक कोई खास एंटीवायरल दवा उपलब्ध नहीं है। लेकिन लक्षण दिखते ही इसका तुरंत इलाज बहुत ज़रूरी है। लक्षण की तीव्रता के आधार पर कुछ मरीज़ों को अस्पताल में भर्ती कराना भी ज़रूरी हो सकता है।

दिमागी बुखार (नवकी बीमारी) की रोकथाम

1.
जेई का पहला टीका 9 माह से 12 माह के बच्चे को और दूसरा टीका 16 माह से 24 माह के बच्चों को नियमित टीकाकरण के अन्तर्गत ज़रूर लगवायें

2.
मच्छर से बचने के लिये पूरी बांह वाली कमीज और पैंट पहनें

3.
स्वच्छ पेयजल ही पियें

4.
अपने आसपास जल जमाव न होने दें

5.
घरों के आसपास स्वच्छता का ध्यान रखें। झाड़ियों को हटाते रहें। नंगे पांव न चलें। चूहों से बचें

6.
कुपोषित बच्चों को बचाने के लिये विशेष ध्यान रखें

7. **व्यक्तिगत साफ़-सफाई**

खुले में शौच न करें, साबुन से हाथ धोने की आदत डालें

रोज़ाना स्नान करें, साफ़ कपड़े पहने, नाखूनों को नियमित काटें, सर में जूँ पड़ने से रोकें

शिक्षक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत साफ़-सफाई सुनिश्चित करने हेतु प्रयत्न करें

दस्तक

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा दिमागी बुखार की रोकथाम के लिये उठाये गये कदम

स्वास्थ्य तंत्र का सुदृढ़ीकरण

- गोरखपुर और बस्ती मंडल के 104 प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर मस्तिष्क रोग उपचार केन्द्रों, एन्सिफेलाइटिस ट्रीटमेंट सेंटर्स (ईटीसी) की स्थापना की गई है। यहां चौबीसों घंटे उपचार की निःशुल्क सेवाएं उपलब्ध हैं।
- सर्वाधिक प्रभावित सात जनपदों के जिला अस्पतालों में गंभीर रूप से बीमार बच्चों के चौबीसों घंटे उपचार के लिए पीडीऐट्रिक इंटेंसिव केयर यूनिट (पीआईसीयू) स्थापित कर वेंटीलेटर के साथ प्रशिक्षित डॉक्टर तैनात किये गये हैं।
- 108 और 102 एम्बुलेंस सेवा को ईटीसी तथा पीआईसीयू के साथ जोड़ा गया है ताकि मरीज़ों को समय से सुरक्षित अस्पताल तक पहुंचाया जा सके।
- 41,000 से अधिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को एईएस के कारणों, रोकथाम और उपचार पर प्रशिक्षित किया गया है।

जन जागरूकता अभियान

दिमागी बुखार (नवकी बीमारी) की रोकथाम में समुदाय की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। इस विषय पर समुदाय को जागरूक करने के लिए पूर्व में भी कई गतिविधियां संचालित की गई हैं। इस वर्ष सबसे अधिक प्रभावित 7 जनपदों में घर–घर जाकर जागरुकता फैलाने के लिये दस्तक अभियान अप्रैल 2018 में आरंभ किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत 2 से 16 अप्रैल तक संचारी रोग नियंत्रण पखवाड़ा मनाया जायेगा। इस पखवाड़े में 1–15 वर्ष के छूटे हुए बच्चों को जेई का टीका भी लगाया जायेगा।

यह अभियान 3 चरणों में चलाया जायेगा – प्रथम चरण माह अप्रैल–मई, द्वितीय चरण माह जुलाई–अगस्त तथा तृतीय चरण माह अक्तूबर–नवंबर में।

- इस पखवाड़े में विभिन्न सरकारी विभाग तथा गैर–सरकारी संगठन एकजुट होकर दिमागी बुखार की रोकथाम के लिये विभिन्न तरह के प्रयास करेंगे।
- दस्तक अभियान के अंतर्गत आशा बहनें दिमागी बुखार से सबसे अधिक प्रभावित 7 जनपदों में घर–घर जाकर इसकी रोकथाम एवं उपचार के विषय में जागरुकता फैलायेंगी।
- दस्तक अभियान में जन प्रतिनिधियों, मीडिया तथा ग़ैर सरकारी संगठनों का व्यापक सहयोग होगा।
- शिक्षकों और स्कूली बच्चों द्वारा समुदाय में दिमागी बुखार की रोकथाम के लिये जागरुकता बढ़ायी जायेगी।